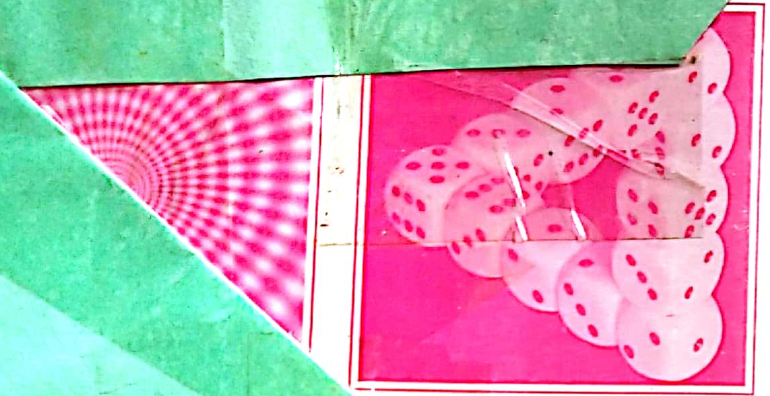

...akes the person looking at it feel ...ving spiral to the center of the image. ...ng when in fact it is staying still. It's the ... making their patient sleepy to mind.

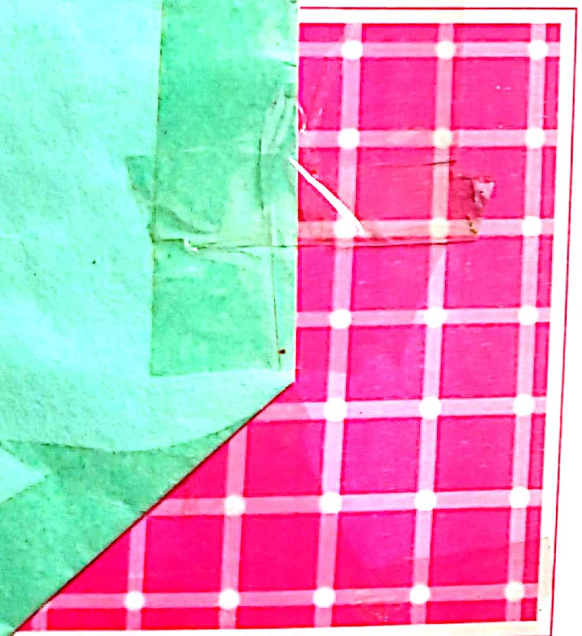

...tion: This picture is an example of a scintillating grid illusion. ... In 1994 by E. Lingelbach, it is similar to the Hermann grid illusion. ...oking at the grid, dark dots seem to appear and disappear at random.

...ernet

UNITED SECULAR SOCIETY

INDEX

Name: Rashmi chaudhary STD. B.Ed SEC.

Subject: Micro teaching file Roll No.

S.No.	Date	Title	Page No.	Teacher's Sign Remarks
1.		प्रस्तावना	5	
2.		सूक्ष्म शिक्षण का अर्थ	6	
3.		सूक्ष्म शिक्षण की परिभाषा	6	
4.		सूक्ष्म शिक्षण का विकास	7	
5.		सूक्ष्म शिक्षण की विशेषताएँ	8	
6.		सूक्ष्म शिक्षण की अवस्थाएँ	10	
7.		सूक्ष्म शिक्षण चक्र	14	
8.		शिक्षण के आधारभुत कौशल	17	
9.		अर्थ	17	
10.		परिभाषा	18	
11.		शिक्षण कौशल की उपयोगिता	२०	
12.		शिक्षण कौशल के प्रकार	२२	
		शिक्षण कौशल		
13.		प्रस्तावना कौशल	२५	
		प्रस्तावना कौशल पर आधारित	32	
		पाठ योजना	33	
14.		व्याख्यान कौशल	35	
		व्याख्यान कौशल पर आधारित	38	
		पाठ योजना	39	
15.		उद्दीपन कौशल	४१	
		उद्दीपन कौशल पर आधारित	४२	
		पाठ योजना	43	
16.		दृष्टान्त कौशल	४४	
		दृष्टान्त कौशल पर	४८	
		आधारित पाठ योजना	४९	

Scanned with CamScanner

S.No	Date	Title	Page No.	Teacher's Sign Remarks
17.		पुर्नबलन कौशल	51	
		पुर्नबलन कौशल पर	54	
		आधारित पाठ योजना	55	
		सन्दर्भ की सूचना	56	

Date
Page

COLLEGE NAME

FAKIRCHAND VIDHYAPETH EDUCATIONAL INSTITUTE

COURSE NAME

B.Ed - 1 YEAR

SESSION

2017 - 2018

FILE NAME

MICRO TEACHING

SUBMITED BY

RASHMI CHAUDHARY

SUBMITED To

Varsha

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

आभाराभिव्यक्ति

कोई भी कार्य सहयोग, मार्गदर्शन व प्रेरणा के बिना पूर्ण नहीं होता है, क्योंकि कार्य करने वाला व्यक्ति तनिक सी बाधा के उत्पन्न होने पर कार्य से विमुख होने लगता है।

यदि वह दुःख में भी सुख का अनुभव करने का अभ्यस्त हो जाये तो निराशा एवं असफलता इसके मार्ग में बाधा नहीं बनती। मुझे सूक्ष्म शिक्षण फाइल के कार्य में मेरी प्रवक्ता ने अपने अमूल्य विचारों द्वारा जो भी पथप्रदर्शन एवं सहायता प्रदान की वह अकथनीय है। इस सन्दर्भ में मैं उनका आभार प्रकट करना चाहूँगी मैं अपने विद्यालय के अन्य प्रवक्ताओं की भी हृदय से आभारी हूँ। जिन्होंने इस फाइल को पूर्ण करने में मेरा सहयोग किया। मैं अपने सहयोगियों अपने परिवारजनों की भी आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे अपने किमती सुझाव दिए, समय दिया व प्रेरित किया। अब यह फाइल आप के समक्ष उपलब्ध है आप मुल्यांकित कर सकेंगे कि मैं अपने कार्य व प्रयास में कहाँ तक सफल रही।

धन्यवाद

MICRO TEACHING

सूक्ष्म शिक्षण

How to teach?

प्रस्तावना

शिक्षण कार्य से सम्बन्धित भिन्न भिन्न शिक्षण कौशल का परिचय और उनका विकास परिक्षार्थी को विभिन्न विद्यालयों में वास्तविक कक्षा शिक्षण से पहले पढ़ाना ही सुक्ष्म शिक्षण है।

सुक्ष्म शिक्षण छात्र- अध्यापक द्वारा थोड़े से समय के लिए दिया गया वह शिक्षण है जिसमें छात्रों का एक छोटा समूह होता है। यह एक प्रारम्भिक परीक्षण प्रविधि होती है। जिसमें नियमित शिक्षण सरल बनाया जाता है।

1. कक्षा में छात्रों की संख्या कम से कम 10 होनी चाहिये।

2. छात्र, अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये पाठ में केवल एक या दो तथ्य होने चाहियें।

3. अध्यापन केवल 5 या 10 मिनट का होना चाहिए।

4. अध्यापन में केवल एक विशिष्ट शिक्षण कौशल अध्यपन कराना चाहिए और उसी को बल दिया जाये जिस से वह कौशल पूर्ण से विकसित हो सके। जैसे:=> व्याख्यान देना, प्रश्न पूछना आदि।

सूक्ष्म शिक्षण का अर्थ

माइक्रो अथवा सूक्ष्म शिक्षण का अर्थ है, लघु कक्षा, लघु पाठ-अवधि तथा लघु पाठ्य-सामग्री से शिक्षण। सूक्ष्म शिक्षण एक ऐसी शिक्षक शिक्षण विधि है जो कक्षा अध्यापन की जटिलता और विस्तार को घटाकर उन्हें लघु रूप देती है और शिक्षण कौशलों एवं निपुणताओं के उन्नयन के लिए कार्य करती है। इसका प्रयोग शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यवहार-परिवर्तन के लिए भी किया जाता है।

सूक्ष्म शिक्षण की परिभाषाएँ

मैकएलीज तथा अर्विन के अनुसार
"शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों द्वारा सरलीकृत वातावरण में किये गये शिक्षण व्यवहारों को तत्काल प्रतिपुष्टि प्रदान करने के लिए क्लोज-सर्किट टेलीविजन के प्रयोग को प्रायः सूक्ष्म-शिक्षण कहा जाता है।"

एस. के. शर्मा के अनुसार
"सूक्ष्म शिक्षण एक विशिष्ट शिक्षक प्रशिक्षण तकनीक है जिसके द्वारा प्रशिक्षणार्थी

प्रतिपुष्टि के सहारे छात्रों के सहभाग को बढ़ाने के लिए विभिन्न कौशलों का विशिष्ट परिस्थितियों में अभ्यास करता है।

आर. एन. बुश के अनुसार
"सूक्ष्म शिक्षण वह प्रविधि है जिसमें शिक्षक स्पष्ट रूप से परिभाषित, शिक्षण कौशलों का प्रयोग करते हुए, ध्यानपूर्वक पाठ तैयार करता है, नियोजित पाठों के आधार पर पाँच से दस मिनट तक वास्तविक छात्रों के छोटे समूह के साथ अन्तःक्रिया करता है।"

बी. के. पासी के अनुसार
"सूक्ष्म शिक्षण एक प्रशिक्षण विधि है जिसमें छात्राध्यापक किसी एक शिक्षण कौशल का प्रयोग करते हुए थोड़ी अवधि के लिए छोटे समूह को कोई एक सम्प्रत्यय पढ़ाता है।"

सूक्ष्म शिक्षण का विकास

विश्वविद्यालयों में शिक्षा व्यवहारों के विकास के लिए होता है। अतः सूक्ष्म शिक्षण अध्यापन की एक वास्तविक स्थिति का वास्तविक रूप है। जिसमें छात्र अध्यापक कक्षा की वास्तविक परिस्थितियों का परिचय सूक्ष्म पाठ कराकर करता है।

Scanned with CamScanner

परिभाषाएँ

D.W Allen के अनुसार

सूक्ष्म शिक्षण से तात्पर्य - शिक्षण क्रिया के उस सरल लघु रूप से है। जिसे थोड़े विद्यार्थियों के सामने अल्प समय में सम्पन्न किया जाता है।

सूक्ष्म शिक्षण की विशेषताएँ

- सूक्ष्म शिक्षण में शिक्षण के तत्वों को सूक्ष्म स्वरूप दिया जाता है।
- यह व्यक्तिशः प्रशिक्षण की विधि है।
- इस विधि में प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण व्यवहार से सम्बन्धित प्रतिपुष्टि तत्काल प्राप्त हो जाती है।
- यह ऐसा वास्तविक शिक्षण है जो केन्द्र बिन्दु प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण-कौशलों का विकास करता है।

कक्षा के आकार को घटाकर छोटा कर दिया जाता है अर्थात् कक्षा में केवल 5 से 10 छात्र ही रखे जाते हैं।

पढ़ाने की अवधि को एक घण्टे या 40 मिनटस से घटाकर 5 से 10 मिनट कर दिया जाता है।

विषय-वस्तु के प्रकरण का आकार छोटा कर दिया जाता है।

अनेक शिक्षण कौशलों के स्थान पर प्राय: एक ही शिक्षण कौशल का अभ्यास किया जाता है।

सूक्ष्म शिक्षण की अवस्थाएँ

सूक्ष्म शिक्षण की तीन अवस्थाएँ हैं, जिन्हें निम्नलिखित चार्ट में प्रदर्शित किया गया है।

सूक्ष्म शिक्षण की तीन अवस्थाएँ

ज्ञानार्जन अवस्था I		कौशलार्जन अवस्था II		स्थानान्तरण अवस्था III	
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
प्रदर्शित कौशलों का निरीक्षण	प्रदर्शन पर चर्चा तथा उसका विश्लेषण	सूक्ष्म पाठ लेखन	कौशल अभ्यास	शिक्षण का मूल्यांकन	वास्तविक शिक्षण परिस्थिति में कौशल का स्थानान्तरण

सूक्ष्म शिक्षण की अवस्थाएँ

उपरोक्त अवस्थाओं को उनके वास्तविक कार्यों को उनके आधार पर सूक्ष्म शिक्षण की निम्नलिखित सोपान है।

सूक्ष्म शिक्षण के बारे में सैद्धान्तिक ज्ञान देना है जैसे - सूक्ष्म शिक्षण का कार्य पद्धति हेतु उपयोग के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ है।

शिक्षण कौशल के विषय में चर्चा करना

किसी एक विशिष्ट शिक्षण कौशल की चर्चा करना

आदर्श पाठ प्रस्तुत करना

आदर्श पाठ निरीक्षण निरीक्षण एवं समायोजना करना

सूक्ष्म पाठ योजना तैयार करना

सूक्ष्म शिक्षण सम्बन्धित परिस्थितियों का आयोजन करना

जैसे :-

- छात्रों की संख्या 5 से 10 है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

- कक्षा में परिवीक्षण कर्त्ता उपस्थित हो
- सूक्ष्म पाठ योजना की अवधि 6 मिनट हो
- सूक्ष्म शिक्षण चक्र की अवधि 36 मिनट की हो

यह अवधि इस प्रकार है।

शिक्षण सत्र	6 मिनट
प्रतिपुष्टि सत्र	6 मिनट
पुर्नयोजनासत्र	12 मिनट
पुनः शिक्षण	6 मिनट
पुनः प्रतिपुष्टि सत्र	6 मिनट
कुल योग	36 मिनट

शिक्षण अभ्यास सत्र का आरम्भ
प्रतिपुष्टि या पृष्ट पोषण प्रदान करना
पुनः पाठ योजना बनाना
पुनः निरिक्षण
पुनः प्रतिपुष्टि प्रदान करना

सूक्ष्म शिक्षण चक्र की प्रश्नावलि तैयार करना
शिक्षण कौशल का स्पष्टीकरण

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

सूक्ष्म शिक्षण चक्र

विवरण के आधार पर सूक्ष्म शिक्षण चक्र के विभिन्न पद चित्र के द्वारा नीचे प्रदर्शित किये जा रहे हैं।

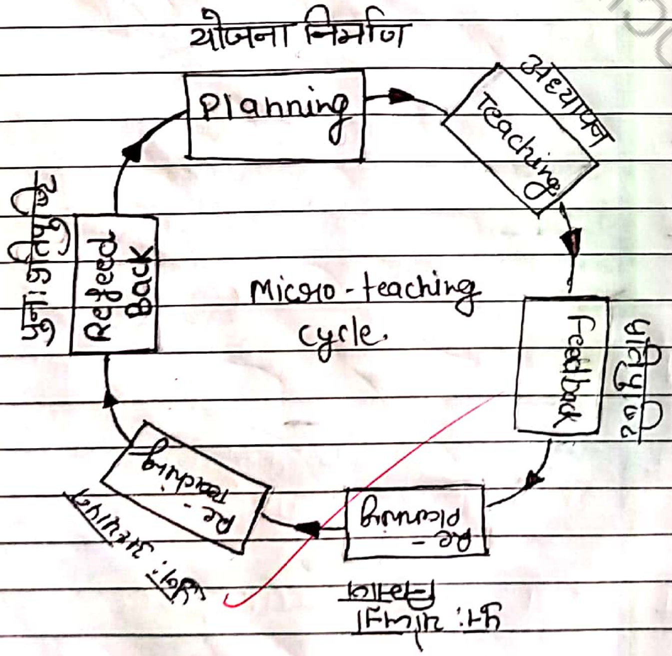

Varaky

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

शिक्षण के आधारभूत कौशल

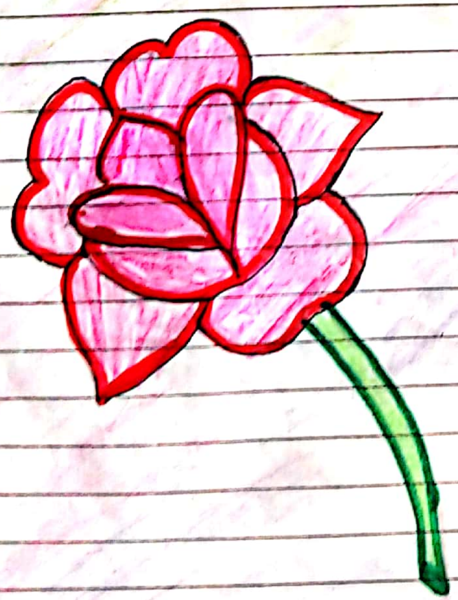

शिक्षण के आधारभूत कौशल

शिक्षण कौशल एक छोटी शैक्षिक प्रक्रिया है जिनके माध्यम से छात्रों को सीखने के लिये सुगमता प्रदान की जाती है और शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जाता है।

शिक्षण कौशल वह है। जिस में शिक्षक अपना व्यवहार सर्वोत्तम बनाता है और समाज में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करता है।

प्रत्येक विषय शिक्षक अपने-2 विषय से सम्बन्धित तकनीकी होती है। जिसके माध्यम से जटिल से जटिल शैक्षिक समस्याओं को सरलतम रूप से कक्षाओं में प्रस्तुत करके अपनी विषय निवारक के रूप में व्यक्तिगत पहचान बनाते हैं। अर्थात अपने नाम के साथ-2 विषय के नाम से अथवा विषये अध्यापक के नाम से भी जाने जाते हैं।

इन सब तथ्यात्मक तथ्यों के आधार पर शिक्षण कौशल को सरलतम अर्थ में निम्नलिखित कथनों अनुसार स्पष्ट किया जा सकता है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

1. शिक्षण कौशल प्रभावी शिक्षण की तकनीकपूर्ण प्रक्रिया है।
2. शिक्षण कौशल के माध्यम से शिक्षक को विशेष शिक्षक की उपाधि मिलती है।
3. शिक्षण कौशल से कठिन से कठिन शैक्षिक समस्यायें सरल बनायी जा सकती हैं।
4. शिक्षण से छात्रों में रुचि या अभिरुचि उत्पन्न करने की कला विकसित होती है।
5. शिक्षण कौशल शिक्षक की वह कला है। जिसके आधार पर वह अपने शिक्षण को प्रभावशाली व आधुनिक बनाता है।

शिक्षण कौशल की परिभाषाएँ

शिक्षण कौशल को विभिन्न विद्वानों ने अपने अपने शब्दों में परिभाषित किया है।

. एन.एल. गेज के अनुसार .

"शिक्षण कौशल एक विशेष अनुदेशन क्रिया है। जिसका प्रयोग शिक्षक अपनी कक्षा में करता है।"

बी० ओ० स्मीथ:- के अनुसार

"शिक्षण कौशल उन कार्यों के रूप में परिचायक हैं जिनसे कुछ पहले निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति होती है एवं कुछ कार्यों से परिशिष्ट हमारी उपेक्षा की जाती है।"

UNITED SECULAR SOCIETY
Scanned with CamScanner

शिक्षण कौशल की उपयोगिता

शिक्षण कौशल की उपयोगिता निम्न प्रकार है :⇒

- शिक्षण कौशल शिक्षक के द्वारा शिक्षण को प्रभावशाली बनाने की प्रक्रिया है।
- शिक्षण कौशल एक विशिष्ट अनुदेशन प्रक्रिया है। इसे शिक्षक अपने कक्षा शिक्षण में प्रयोग करता है।
- शिक्षण कौशल शिक्षण कार्यक्रम की विभिन्न प्रक्रियाओं से सम्बन्धित होती है। जिन्हें शिक्षक अपनी कक्षा में अन्तः क्रिया से लगातार प्रयुक्त करते हैं।
- शिक्षण कौशल शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने की अति महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।
- शिक्षण कौशल एक महत्वपूर्ण विकास की प्रक्रिया है।

- शिक्षण कौशल पूर्ण व्यवहारों से सम्पादन से सम्बन्धित है जो छात्रों के सीखने के लिए सुगमता प्रदान करने के इरादे से किये जाते हैं।
- शिक्षण कौशल में शिक्षक अपने व्यवहार व वाणी को प्रभावी बनाकर छात्रों को अध्यापन के प्रति आकर्षित करता है।
- शिक्षण कौशल में विभिन्न चित्रों कार्यांशों एवं प्रभावशाली उदा प्रस्तुत किये जाते हैं।
- शिक्षण कौशल एक कला है जिसके द्वारा पाठ आरम्भ इस प्रकार करते हैं कि अन्तः एक ही बार उसके आगे की स्थिति जानने की जिज्ञासा जागती है।
- शिक्षण कौशल एक विज्ञान भी है इसके अन्तर्गत अध्यापन के द्वारा निश्चित नियम सिद्धान्तों का उपयोग किया जाता है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

शिक्षण कौशल के प्रकार

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया का विश्लेषण करने के उपरान्त विभिन्न शिक्षण कौशलों की सूची तैयार की है।
स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध अमेरिकी प्रोफेसर डी० एन० ने 1964 में 14 शिक्षण कौशलों का उल्लेख किया।
कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के बोर्ड तथा अन्य 1970 में 18 शिक्षण कौशलों की सूची तैयार की जिसमें भारतीय शिक्षाशास्त्री इंदौर विश्वविद्यालय V. K पासी ने 1976 शिक्षण कौशलों का अध्ययन कर 13 कौशलों की सूची प्रस्तुत की।
प्राथमिक शिक्षा के मुख्य रूप से 13 शिक्षण कौशल है। जिनका प्रयोग शिक्षक अपने शिक्षण को रुचिपूर्ण एवं प्रभावी बनाने हेतु प्रयोग करते है।

1. पाठ प्रस्तावना कौशल
2. अनुकूल प्रश्न कौशल
3. उद्दीपन परिवर्तन कौशल

4. व्याख्या कौशल
5. पुनर्बलन कौशल
6. खोजपूर्ण प्रश्न कौशल
7. दृष्टान्त व्याख्या कौशल
8. मौन तथा आंशिक अन्तः प्रक्रिया
9. छात्रों की सहभागिता को प्रोत्साहन
10. श्यामपट्ट कौशल
11. कक्षा व्यवस्था का कौशल
12. दृश्य-श्रव्य सामग्री के प्रयोग का कौशल
13. समीपता की प्राप्ति का कौशल

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना कौशल

प्रस्तावना कौशल

यह वह शिक्षण कौशल होता है जो शिक्षक द्वारा नये पाठ की शुरुआत का समय प्रयोग किया जाता है।

पाठ प्रस्तावना कौशल की यह मान्यता है कि पाठ के प्रस्तुतिकरण जितनी आकर्षक व रोचक होगी उतनी ही छात्रों का ध्यान उस पर केन्द्रित होगा।

शिक्षक द्वारा छात्रों को नवीन पाठ की याद कराने व ध्यान केन्द्रित करने के लिए छात्रों को पूर्व ज्ञान परीक्षा ली जाती है।

जिसके द्वारा नवीन ज्ञान प्रदान करने में सुविधा रहती है, और शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति होती है।

प्रो० टी० रेमाण्ड के अनुसार.

"प्रस्तावना का उद्देश्य बालकों को नये ज्ञान के लिये तैयार करना है। तथा इनका यह उद्देश्य यह है कि विषय से सम्बन्धित पूर्व संचित

ज्ञान को विधिपूर्वक स्पष्ट व निश्चितता से बालकों की वर्तमान चेतना में लाया जा सके इसके लिए पूर्व ज्ञान को दोहराना तथा नवीन ज्ञान के लिए उपयुक्त वातावरण का सर्जन अति आवश्यक है।

प्रस्तावना अनेक प्रकार से प्रस्तुत की जा सकती है।

जैसे :=> चित्रों द्वारा प्रदर्शन करके तथा कहानी कथन द्वारा या कहानी सुनकर भी प्रस्तुत की जा सकती है।

प्रस्तावना का पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित होना आवश्यक है। प्रस्तावना चाहे प्रश्न से की जावे या कहानी कहकर उसका मुख्य लक्ष्य सम्बन्ध से नहीं हटना चाहिए तथा प्रस्तावना कर्ता सम्भव संक्षिप्त या विस्तार में प्रस्तुत होनी चाहिए।

यदि प्रस्तावना प्रश्नों के माध्यम से की जाती है तो प्रश्नों की संख्या उसमें 5 अथवा अधिकतम 6 होनी चाहिए।

प्रश्नों का क्रम इस प्रकार होना चाहिए कि प्रथम पूर्व ज्ञान पर आधारित हो तथा अगला प्रश्न प्रथम प्रश्न के सम्भावित उत्तर पर आधारित हो।

इसे विनाश प्रेरण कौशल भी कहा गया है। जैसा कि एल० सी० सिंह ने लिखा प्रस्तावना पद पाठ में तत्कालीन अन्तरसता प्राप्त करने के लिए शिक्षक एवं छात्र के माध्यम ज्ञानात्मक तथा आत्मीयता का स्थान निरूपित करता है।

प्रस्तावना का मुख्य उद्देश्य छात्रों को पूर्व ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान ग्रहण कराने के लिए तैयार करता है, अतः इस पद में विशेष सावधान की आवश्यकता होती है। क्योंकि प्रस्तावना पाठ की नींव है। जिस पर कक्षा शिक्षण आधारित है।

ह्यूट एफ यविजेज ने प्रस्तावना की तीन विधियों का उल्लेख किया है।

① पूर्व ज्ञान पर आधारित प्रश्न पूछना।

② श्यामपट पर अंकित शीर्षक लिखना।

③ पिछले पाठ का संक्षिप्त उल्लेख करना।

इसमें प्रश्न पूछने की विधि को प्रमुखता दी जाती है। क्योंकि प्रश्नों से छात्रों की मानसिक क्रिया जाग्रत होती है।

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना प्रश्न श्रृंखलाबद्ध एवं सहसम्बन्धित होने चाहिए। जो छात्रों को दिये जाने वाले नवीन ज्ञान की ओर प्रेरित करें। जहाँ तक सम्भव हो अन्तिम प्रश्न समस्या तक होना चाहिए। प्रस्तावना के लिए 3 या 4 प्रश्न पर्याप्त होते हैं।

प्रस्तावना कौशल के घटक

पाठ प्रस्तावना कौशल के निम्नलिखित घटक हैं

1. कथनों एवं प्रश्नों का छात्रों के पूर्व ज्ञान से सम्बन्ध
2. कथनों एवं प्रश्नों का मूल पाठ से सम्बन्ध
3. कथनों एवं प्रश्नों में श्रृंखलाबद्धता
4. उचित सहायक उपकरणों द्वारा पठन का प्रयोग
5. उपयुक्त एवं समुचित अवधि

6. छात्रों का ध्यान एवं रुचि आकर्षित
7. प्रस्तावना का प्रथम पूर्ण प्रतिकाण।

UNITED SECULAR SOCIETY
Scanned with CamScanner

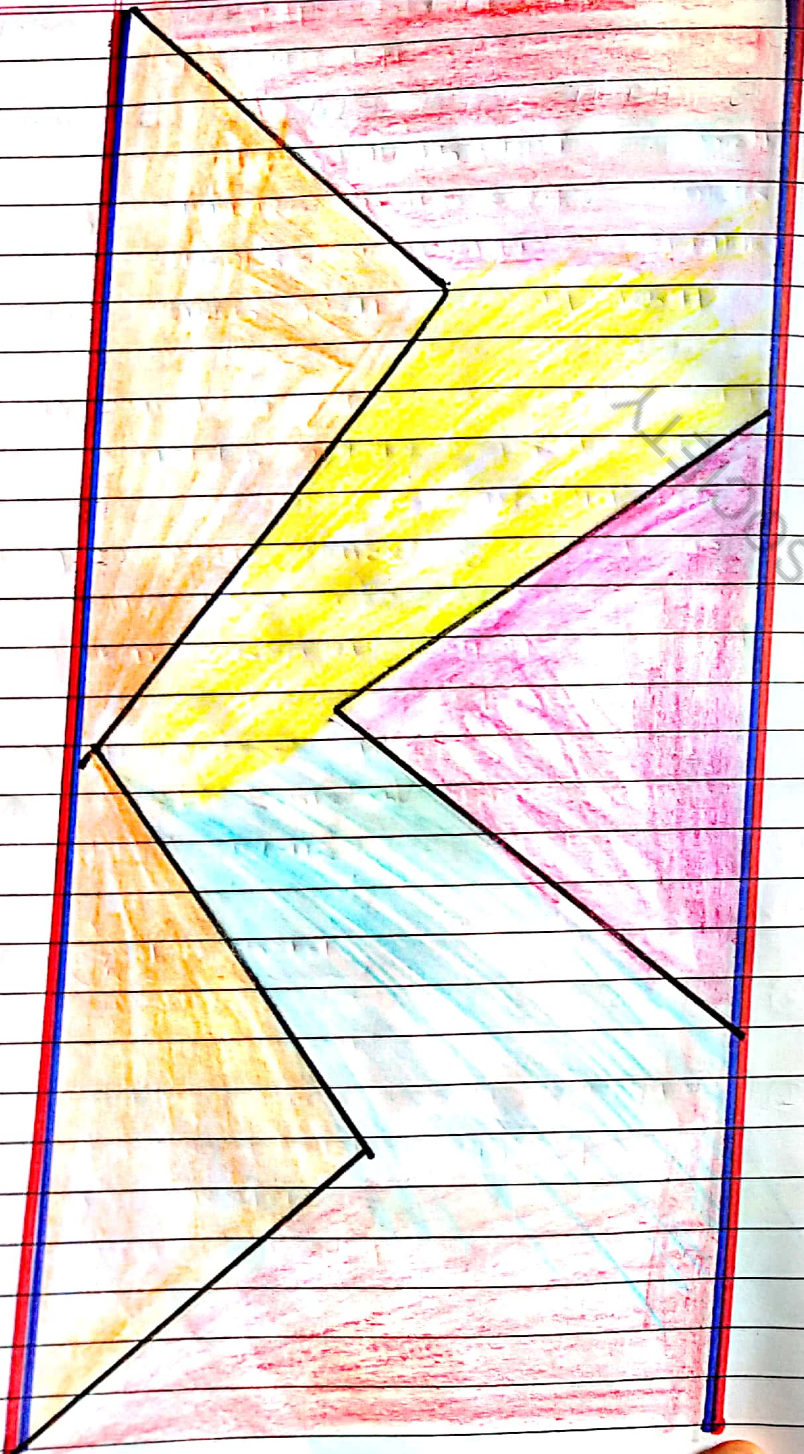

प्रस्तावना कौशल पर आधारित पाठ योजना

UNITED SECULAR SOCIETY
Scanned with CamScanner

प्रस्तावना कौशल पर आधारित पाठ योजना -

दिनांक 22/Jan/18

विषय:- सामाजिक विज्ञान — कक्षा :- VIII
उपविषय:- नागरिकशास्त्र — कालांश :- II
प्रकरण:- विदेश नीति — समयावधि :- 5-7 मि०

क्र० सं०	शिक्षक क्रिया	छात्र क्रिया	विधि/प्रविधि
प्रश्न ①	भारत के प्रथम प्रधानमंत्री कौन थे?	उ० :→ भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू थे	प्रश्नोत्तर विधि।
प्रश्न ②	बच्चे पं० जवाहर लाल नेहरू को क्या कहते थे?	उ० :→ बच्चे पं० जवाहर लाल को चाचा नेहरू कहते थे।	प्रश्नोत्तर विधि
प्रश्न ③	पंडित नेहरू ने किस प्रकार की नीति अपनाई?	छात्र निरुत्तर	प्रश्नोत्तर विधि
	उद्देश्य कथन		
	छात्रों आज हम भारत की विदेश नीति के विषय में विस्तृत अध्ययन करेंगे।	छात्र ध्यानपूर्वक सुनते हैं।	

(रेटिंग स्केल) (मूल्यांकन प्रपत्र)

क्र० सं०	घटक	0	1	2	3	4	5
①	विचार कथन तथा प्रश्न श्रृंखलाबद्ध थी।						
②	कथनों का विषय वस्तु और उद्देश्यों से सम्बन्ध था।						
③	पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित प्रश्न पूछे गये।						
④	शिक्षक विद्यार्थी में रुचि और अभिप्रेरणा पैदा कर सका।						
⑤	प्रस्तावना अवधि उपयुक्त थी।						
⑥	उद्देश्यों के अनुसार सहायक सामग्री का प्रयोग किया गया।						

निरीक्षक हस्ताक्षर

UNITED SECULAR SOCIETY
Scanned with CamScanner

व्याख्यान कौशल

व्याख्यान कौशल

शिक्षा में अनेक प्रकार के सिद्धान्त तथा नियमों आदि को समझाना पड़ता है। जिसके लिए उनकी व्याख्या करना बहुत आवश्यक है जो कि पूरी तरह से सम्बन्धित क्रम के अनुसार तथा सरल एवं सार्थक कथनों के द्वारा की जाती है।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पाठ्य-क्रम में कठिन अंशों को सरलतम क्रम में प्रस्तुत करने को भी स्पष्टीकरण कहलाता है।

जिसमें सभी तथ्य तार्किक क्रम में रखे जाते हैं, जो कि सरल उदाहरण द्वारा और अधिक स्पष्ट हो जाते हैं।

व्याख्यान कौशल वाक्यों का वह समूह है जिसके द्वारा किसी नियम, व परिभाषा, विधि-प्रविधि तथा संरचना आदि को भांति-भांति समझाने के लिए अतः सम्बन्धित कथनों का प्रयोग किया जाता है।

व्याख्यान कौशल का प्रमुख

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

उद्देश्य स्पष्टीकरण के प्रभावशाली व्यवहारों में वृद्धि करना तथा बाधा डालने वाले घटकों को कम करना है।

व्याख्यान कौशल के घटक

1. प्रारम्भिक कथनों का स्पष्टता से प्रयोग करना
2. निष्कर्षात्मक को स्पष्ट करना
3. भाषा में प्रवाह का होना
4. उपयुक्त शब्दों का होना
5. असम्बद्ध कथनों की अनुपस्थिति
6. विचारों में परस्पर जोड़ने वाले शब्दों का प्रयोग

7. छात्रों को बोध के परीक्षण हेतु बीच में पूछे गये प्रश्न

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

व्याख्यान कौशल पर आधारित पाठ योजना।

दिनांक

विषय :→ सामाजिक अध्ययन कक्षा - 8th
उपविषय :→ नागरिक शास्त्र कालांश - II
प्रकरण :→ राष्ट्रीय ध्वज समयावधि - 5-7 मि०

पाठ्य बिन्दु	शिक्षक क्रियाएं	छात्र क्रियाएं	विधि प्रविधि।
राष्ट्रीय ध्वज का महत्व,	① हमारे राष्ट्रीय ध्वज को तिरंगा कहा जाता है। ② इसमें तीन रंग क्रमश: केसरिया, सफेद व हरा होते हैं। ③ इसके बीच में चक्र होता है। जिसमें 24 तिल्लियाँ होती हैं ④ राष्ट्रीय ध्वज को 15 अगस्त व 26 जनवरी को फहराया जाता है	छात्र ध्यानपूर्वक सुनते हैं।	व्याख्यान विधि।

(रेटिंग स्केल) (मूल्यांकन प्रपत्र)

क्र० सं०	घटक	0	1	2	3	4	5
①	व्याख्यान शुरू करने की योग्यता।						
②	व्याख्यान में प्रयुक्त भाषा का सरल होना।						
③	पाठ की गति।						
④	दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग						
⑤	शिक्षण बिन्दुओं को दोहराना						
⑥	अन्त: क्रिया में परिवर्तन होना।						
⑦	रुचिकर युक्तियों का प्रयोग।						
⑧	आवाज का स्पष्ट होना						
⑨	कथनों का स्पष्ट होना						
⑩	व्याख्या समाप्त करने की योग्यता						

निरीक्षक हस्ताक्षर

Scanned with CamScanner

उद्दीपन कौशल

उद्दीपन कौशल

छात्रों का ध्यान आकर्षित करने के लिए तथा ध्यान को पाठ से लगाये रखने के लिए शिक्षक अपने व्यवहारों में जान बूझकर जो परिवर्तन लाता है। उसे उद्दीपन परिवर्तन कौशल कहते हैं।

उद्दीपन कौशल के घटक

1. शरीर संचालन
2. भाव मुद्रा
3. स्वर आरोह अवरोह
4. भाव केन्द्रियकरण
5. छात्र शिक्षक परस्पर क्रिया प्रारूप परिवर्तन
6. मौखिक दृश्य क्रम परिवर्तन

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

उद्दीपन कौशल पर आधारित पाठ योजना

दिनांक | विषय:- सामाजिक विज्ञान | कक्षा:- VIII
उपविषय:- नागरिक शास्त्र | कालांश:- II
प्रकरण:- यातायात के साधन | समयावधि:- [illegible]

मुख्य बिन्दु	शिक्षक क्रियाएं	छात्र क्रियाएं	विधि प्रविधि
यातायात के साधन	एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्वयं को पहुंचाने का कार्य यातायात के साधनों द्वारा होता है। यातायात तीन प्रकार के होते हैं वायु मार्ग, जलमार्ग थल मार्ग। यातायात के साधन मोटर, बस, रेल हवाई जहाज, पानी का जहाज आदि हैं।	छात्र ध्यानपूर्वक सुनते हैं।	व्याख्यान एवं प्रदर्शन विधि यातायात के साधन के प्रकार → वायुमार्ग → स्थलमार्ग → जलमार्ग

रेटिंग स्केल — मूल्यांकन प्रपत्र

क्र० सं०	घटक	0	1	2	3	4	5
①	शरीर संचालन						
②	स्वर में उतार चढ़ाव						
③	भाव केन्द्रिकरण						
④	हाव-भाव, मुख्य मुद्रा, हाथ व मुँह से संकेत						
⑤	मौन विराम,						
⑥	श्रव्य-दृश्य क्रम परिवर्तन						
⑦	छात्रों का सहयोग						

निरीक्षक हस्ताक्षर

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

दृष्टान्त कौशल

जब शिक्षण प्रक्रिया में सिद्धान्त या विषय को शिक्षक व्याख्यान के द्वारा स्पष्ट नहीं कर पाते तब वह, कई बार चित्रों, स्पष्टीकरणों तथा उदाहरणों का सहारा लेकर उन्हें स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं।

दृष्टान्तों तथा उदाहरणों के माध्यम से शिक्षक नवीन, कठिन, व अमूर्त ज्ञान को सरलता से छात्रों तक पहुँचा देता है।

दृष्टान्त का शाब्दिक अर्थ है- व्याख्या देकर, तथा विभिन्न साधन उपकरणों का प्रयोग करके स्पष्ट करना दृष्टान्त शिक्षण में विशेष उपयोगी है

क्योंकि शिक्षक दृष्टान्त अथवा उदाहरण द्वारा जटिल तथ्यों, घटनाओं, रोचक, सजीव, बोधगम्य एवं प्रभावपूर्ण बना देते हैं

इससे छात्रों का ध्यान विषय-वस्तु पर केन्द्रित रहता है।

शिक्षक को उदाहरणों तथा दृष्टान्तों को कक्षा में प्रभावशाली विधि से छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए।

दृष्टान्त के प्रकार

दृष्टान्त कौशल दो प्रकार के होते हैं।

① मौखिक या शाब्दिक दृष्टान्त
② दृश्य या सामग्री दृष्टान्त

मौखिक

शिक्षक इनकी सहायता से तथ्यों के स्पष्टीकरण छात्रों के समक्ष मौखिक रूप से शाब्दिक चित्र प्रस्तुत करता है। इसलिए इसे शाब्दिक दृष्टान्त भी कहा जाता है।

दृश्य या सामग्री

दृश्य या सामग्री के अन्तर्गत वे दृष्टान्त व उपकरण आते हैं जिन्हें शिक्षक तथ्यों के स्पष्टीकरण के समय यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है।

ये मस्तिष्क को ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

UNITED SECULAR SOCIETY
Scanned with CamScanner

इन्हें दृष्टान्त सामग्री भी कहा जाता है।

जैसे :- चित्र, रेखाचित्र, चार्ट ग्राफ, एवं मॉडल आदि।

दृष्टान्त या उदाहरणों के प्रकार

शाब्दिक
1. कहानी कथन
2. घटना का वर्णन
3. चुटकुले
4. कविता
5. लेख

अशाब्दिक
1. वास्तविक उदाहरण
2. मॉडल तथा चित्र
3. मानचित्र व रेखाचित्र
4. प्रायोगिक प्रदर्शन

दृष्टान्त कौशल पर आधारित पाठ योजना

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

दृष्टान्त कौशल पर आधारित पाठ योजना

दिनांक विषय :- सामाजिकशास्त्र कक्षा - VIII
उपविषय :- नागरिक शास्त्र कालांश - II
प्रकरण :- राष्ट्रपति समयावधि - 5-7 मि०

प्रमुख बिन्दु	शिक्षक - क्रिया	छात्र क्रिया	शिक्षण प्रविधि
राष्ट्रपति पद की योग्यता	जिस प्रकार शिक्षकपद, इंजीनियर के पद व डॉक्टर के पद के लिए कुछ योग्यताएं निर्धारित की गयी हैं ठीक उसी प्रकार राष्ट्रपति पद के लिए भी निम्नलिखित योग्यताएं चाहिए।	छात्र ध्यानपूर्वक सुनते हैं।	दृष्टान्त विधि
①	वह भारत का नागरिक हो।		
②	उसकी आयु 35 वर्ष से अधिक हो।		
③	लोक सभा का सदस्य निर्वाचित किए जाने के योग्य हो।		
④	किसी लाभ के पद पर न हो।		

रेटिंग स्केल मूल्यांकन प्रपत्र

क्र० सं०	घटक	1	2	3	4	5
①	उदाहरणों की सरलता एवं सार्थकता					
②	उदाहरणों की रोचकता					
③	आगमन - उपागम का प्रयोग।					
④	निगमन उपागम का प्रयोग					
⑤	उदाहरणों का प्रस्तुतीकरण					

निरीक्षक हस्ताक्षर

पुर्नबलन कौशल

पुर्नबलन कौशल

पुर्नबलन से हमारा तात्पर्य ऐसे उद्दीपनों के प्रयोग से है जिनके प्रस्तुतीकरण से या हटाने से किसी अनुक्रिया के होने की संभावना अधिक हो जाती है। वह वस्तु या उद्दीपन जिसके सहारे पुर्नबलन दिया जाता है। उसे पुर्नबलन कहते हैं। शिक्षक को अपने शिक्षण को प्रभावशाली व छात्रों को अधिगम को स्थायी बनाने के लिए छात्रों को पाठ में रुचि के लिए इस कौशल का प्रयोग करना पड़ता है। पुर्नबलन या पुर्नबलन उद्दीपन कोई घटना है जो अपने व्यवहार में परिवर्तन लाती है।

पुर्नबलन से हमारा अभिप्राय है ऐसे उद्दीपन का प्रयोग करना जिनके प्रस्तुतीकरण या जिनके हटाने से किसी अनुक्रिया के होने की आशा बढ़ जाती है। इन उद्दीपनों में पुरस्कार, शाबाशी देना, प्रशंसा करना, कमियाँ बताना आदि, क्रियाएँ आती हैं। ये दो प्रकार की होती हैं।

1) धनात्मक पुनर्बलन
2) ऋणात्मक पुनर्बलन।

धनात्मक पुनर्बलन द्वारा छात्रों के वांछित व्यवहारों को प्रबल बनाया जाता है। और ऋणात्मक पुनर्बलन के द्वारा छात्रों को गलत या अवांछित व्यवहारों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। पुनर्बलन कौशल का अभ्यास इस प्रकार कराया जाता है कि शिक्षक धनात्मक पुनर्बलन का प्रयोग अधिक से अधिक तथा ऋणात्मक पुनर्बलन का प्रयोग करने से कम कक्षा शिक्षण के क्षेत्र में करे।

पुनर्बलन कौशल के घटक

1. प्रशंसात्मक कथनों का प्रयोग
2. हाव भाव तथा अन्य अशाब्दिक संकेतों का प्रयोग
3. छात्रों के विचारों एवं भावों से अपनी सहमति प्रकट करना
4. नकारात्मक शाब्दिक कथनों का प्रयोग।
5. नकारात्मक अशाब्दिक कथनों का प्रयोग।
6. छात्रों के सही उत्तरों को श्यामपट पर लिखना
7. पुनर्बलन का समुचित उपयोग।
8. छात्रों के सुझाव का समर्थन

पुनर्बलन कौशल पर आधारित पाठ योजना

UNITED SECULAR SOCIETY
Scanned with CamScanner

54

Date Page 54

पुनर्बलन कौशल पर आधारित पाठ योजना

दिनांक

विषय :- सामाजिक विज्ञान कक्षा :- VIII
उपविषय :- नागरिक शास्त्र कालांश :- II
प्रकरण :- भारतीय संविधान समयावधि :- 35 मि०

पाठ्य बिन्दु	शिक्षक क्रियाएं	छात्र क्रियाएं	शिक्षण युक्तियाँ
भारतीय संविधान	प्रश्न हमारे देश के संविधान के रचयिता कौन हैं? अच्छा शब्द.	हमारे संविधान के रचयिता डॉ० भीमराव अंबेडकर जी हैं।	प्रश्नोत्तर विधि
	प्रश्न भारतीय संविधान कब लागू हुआ था? v-good	26 जनवरी 1950	प्रश्नोत्तर विधि
	प्रश्न भारतीय संविधान को लिखने में कितना समय लगा?	भारतीय संविधान को लिखने में 2 वर्ष 11 महीने 18 दिन का समय लगा।	प्रश्नोत्तर विधि

55

Date Page 55

(रेटिंग स्केल) (मूल्यांकन प्रपत्र)

क्र० सं०	घटक	0	1	2	3	4	5
①	प्रशंसात्मक कथनों का प्रयोग						
②	हाव भाव तथा अन्य अशाब्दिक संकेतों का प्रयोग						
③	छात्रों के विचारों एवं भावों से अपनी सहमति प्रकट करना						
④	नकारात्मक शाब्दिक कथनों का प्रयोग						
⑤	नकारात्मक अशाब्दिक कथनों का प्रयोग						
⑥	छात्रों के सही उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखना।						
⑦	पुनर्बलन का समुचित उपयोग						
⑧	छात्रों के सुझाव का समर्थन						

निरीक्षक हस्ताक्षर

Vandey

सन्दर्भ की सूचना

क्रम सं.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
①	शैक्षिक तकनीकी, प्रबन्ध एवं मूल्यांकन	जे॰ सी॰ अग्रवाल
②	शिक्षक, शिक्षण एवं तकनीकी	डॉ॰ एच॰ बी॰ भटनागर डॉ॰ अनुराग भटनागर

The end

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner